Dr. HONEY SINHA
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College, SAHARSA

Lecture:-43

PAGE :
DATE :

Sub:- Specialised Accounting (Hons)
Paper:- IV

B.Com Part-2nd Sub:- Specialised Accounting (Honours)

* Introduction *

* Meaning of ABSORPTION * (संविलयन का आशय)

जब एक विद्यमान कम्पनी उसी प्रकार का व्यापार करने वाली दूसरी कंपनी को एक आपसी समझौते के अन्तर्गत निर्धारित हुए प्रतिफल के बदले में क्रय करती है, तो इसे संविलयन (Absorption) कहा जाता है।

संविलयन का आशय :- इस परिभाषा के अनुसार संविलयन के निम्न आवश्यक अंग है :-

(1) एक विद्यमान कम्पनी द्वारा
(2) दूसरी उसी प्रकार का व्यापार करने वाली कम्पनी को,
(3) क्रय करना
(4) यक्रय किसी प्रतिफल के बदले में होना,
(5) प्रतिफल क्रेता व विक्रेता कम्पनियों द्वारा तय किया जाना,
(6) क्रय के बाद विक्रेता कम्पनी का अस्तित्व समाप्त हो जाना,
(7) दोनों कम्पनियों के स्थान पर एक क्रेता कम्पनी ही रह जाती है, और वही सारे व्यापार को चलाती है।

* संविलयन के उद्देश्य (Objects of Absorption) :-

संविलयन के उद्देश्य भी वही

Scanned with CamScanner

PAGE :
DATE : / /

भी वही है जो एकीकरण के है, (Amalgamation) परंतु यहां उन उद्देश्यों में से निम्नलिखित पर अधिक जोर दिया जाता है:-

प्रतियोगिता का अन्त करना :- यह तो सभी जानते है कि जब दो व्यापारियों में प्रतिस्पर्द्धा होती है तो ग्राहक को लाभ प्राप्त होता है और दोनो व्यापारियों को हानि। फल यह होता है कि उन दोनो व्यापारियों में जो कमजोर होता है, वह शीघ्र समाप्त हो जाता है किन्तु एक धक्का बड़े व्यापारी को भी लगाता है। अतः बड़े व छोटे दोनो व्यापारी अपने-अपने हित में एक क्रय व विक्रय प्रसंविदा करते है और संविलयन द्वारा प्रतिस्पर्द्धा समाप्त करते है। यहां यह कहा जा सकता है कि इस विधि से छोटे व्यापारी अर्थात् विक्रेता को बड़ी हानि होती है उसे अपना व्यापार बंद करना पड़ता है परंतु ऐसे विचार करना उचित नही है। विक्रेता को निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते है:-

(अ) यदि वह अपने व्यापार को न बेचता तो बड़े व्यापारी की प्रतिस्पर्द्धा में उसका बहुत समय तक ठहरना कठिन होता और अंत में बड़ी हानि उठाकर उसे अपने व्यापार को अपने आप बंद करना पड़ता। अतः बिक्री द्वारा उचित प्रतिफल प्राप्त करना उसके हित में है।

(ब) इस मूल्य से, जो व्यापार बेचने से प्राप्त हुआ है, वह ऐसा कार्य कर सकता है जिससे उसे उस व्यापार से अधिक लाभ प्राप्त हो जिसमें की वह अपनी

Scanned with CamScanner

राशि लगाए हुए था। व्यावहारिक रूप में जब संविलयन के समय आपसी समझौते द्वारा मूल्य-निर्धारण किया जाता है तो विक्रेता के सामने अन्य आधारों में से सबसे महत्वपूर्ण आधार यह होता है कि इस व्यापार के बेचने से मिलने वाली राशि से यदि कोई दूसरा व्यापार चलाया जाए तो दूसरे व्यापार के विद्यमान व्यापार से होने वाली आय से कितना अधिक लाभ होगा?

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
Sub:- Specialised Accounting (Honours)
Paper:- IX
SNSRKS College, SAHARSA
EMAIL-ID: drHoneySinha@gmail.com

Scanned with CamScanner